'हिंदी दिवस' के उपलक्ष्य में दिनांक 18 सितंबर 2017 को कॉलेज ऑफ़ वोकेशनल स्टडीज़, दिल्ली विश्वविद्यालय में हिंदी साहित्य सभा 'संवाद' द्वारा एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका विषय था 'राष्ट्र-निर्माण में हिंदी की भूमिका'। इस कार्यक्रम में देश के जाने-माने लेखक, विचारक, पत्रकार, राजनीतिक विश्लेषक एवं हिन्दी प्रेमी डॉ. वेदप्रताप वैदिक उपस्थित थे। कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुई। इसके पश्चात इस गोष्ठी के मुख्य वक्ता को एक पौधा भेंट कर उनका स्वागत किया गया।

इस अवसर पर हिंदी विभाग की वरिष्ठ अध्यापिका डॉ. रत्नावली कौशिक ने मुख्य वक्ता का संक्षिप्त परिचय देते हुए और हिंदी के विकास में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान को रेखांकित करते हुए कहा कि विश्व के कई देशों में आज जो भी हिंदी शिक्षण कार्य हो रहा है उसमें वेदप्रताप वैदिक की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इन्होंने हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। ऐसे विरले व्यक्तित्व का आज हमारे बीच में होना गर्व की बात है। डॉ कौशिक ने हिंदी भाषा के प्रति उनके शुरुआती संघर्षों को याद करते हुए कहा कि एक समय ऐसा था जब डॉ. वैदिक को हिंदी माध्यम में पीएचडी शोध-प्रबंध लिखने पर रोक लगा दी गयी जिसकी वजह से उस दौरान भारतीय संसद में जमकर हंगामा हुआ जिसके पश्चात नियमावली में संशोधन हुआ और हिंदी में लिखित थीसिस जमा करने की अनुमति प्रदान की गई। इस घटना ने एक तरह से स्वभाषा के प्रति प्रेम को विकसित करने में मदद की।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. इंद्रजीत डागर ने मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए कहा कि हमारे लिए आज का दिन शुभ है क्योंकि हमारे महाविद्यालय में हिंदी भाषा के प्रबल समर्थक और जाने-माने विद्वान व पत्रकार वेदप्रताप वैदिक मौजूद हैं। इनकी मौजूदगी ही हमारी अपनी भाषा के प्रति लगाव को दर्शाती है। डॉ. डागर ने हिंदी की महत्ता का विशेष रूप से उल्लेख करते हुए कहा कि हिंदी हमारी मातृभाषा है और किसी भी राष्ट्र का निर्माण और विकास बिना मातृभाषा के संभव नहीं है। उन्होंने कहा कि इस देश में हिंदी के बरक्स अंग्रेजी को महत्त्व देना मौलिकता का गला घोटना है, क्योंकि किसी भी व्यक्ति की मौलिक सोच अपनी भाषा में ही बनती है। इसलिए निज भाषा या स्वभाषा को विकसित करने की आवश्कता है।

इस संगोष्ठी के मुख्य वक्ता डॉ. वेदप्रताप वैदिक ने हिंदी के लिए अपने संघर्षों को याद करते हुए कहा कि हमारा संघर्ष केवल हिंदी भाषा को लेकर नहीं था बल्कि समस्त भारतीय भाषाओं के लिए भी था। उन्होंने कहा कि न तो हमें विदेशी भाषाओं से कोई दुराग्रह है न ही कोई विरोध। अंग्रेजी से तो बिल्कुल भी नहीं।लेकिन हिंदी के सिर पर जब अंग्रेजी को बैठाया जाएगा तो हमारा सक्रिय विरोध रहेगा ही, इसलिए अंग्रेजी को हटाना बहुत ज़रूरी है। डॉ. वैदिक ने अंग्रेजी को पाखंड और अवैज्ञानिक भाषा बताते हुए कहा कि इस भाषा में बहुत कम रचनाकार और मौलिक रचनाएं हुई हैं। उन्होंने कहा कि दुनिया के तमाम देशों में जितने भी विद्वान, चिंतक, वैज्ञानिक आदि हुए हैं सबने अपनी भाषा यानी स्वभाषा में रचनाएं की है। इसलिए जब तक हम अपनी भाषा में लिखने-पढ़ने का कार्य नहीं करेंगे तबतक न तो हमारा विकास होगा न देश का। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि सरकार को त्रिभाषा-सूत्र की नीति को सख़्ती से लागू कर उसका पालन करना चाहिए। डॉ. वैदिक ने इस अवसर पर इस सभागार में उपस्थित सभी सदस्यों से हिंदी में हस्ताक्षर करने का आह्वान किया।

कॉलेज के चेयरमैन आर.एन. पी. सिंह ने औपनिवेशिक काल में अंग्रेजों की भाषा-नीति पर सवाल उठाते हुए कहा कि एक साजिश के तहत मैकाले की भाषा-नीति को हिंदुस्तानी भाषा के बरक्स लाया गया ताकि भारत पर लंबे समय तक राज किया जा सके। मैकाले का मानना था कि जिस देश की भाषा और संस्कृति पर कब्जा हो जाए तो फिर उस देश पर आसानी से राज किया जा सकता है। उन्होंने अफसोस जताते हुए कहा कि आज भी हमारे देश में अप्रत्यक्ष रूप से कहीं न कहीं मैकाले की नीतियों को अपनाया जा रहा है।

कार्यक्रम के अंत में हिंदी विभाग के प्रभारी डॉ. हरजेंद्र चौधरी ने हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित 'नारा लेखन' प्रतियोगिता में सफल प्रतिभागियों के नामों की घोषणा की, जिसमें प्रथम पुरस्कार शिवानी मित्तल, द्वितीय आकाश एवं तृतीय पुरस्कार विस्मयी को दिया गया।

इस कार्यक्रम का संचालन डॉ रत्नावली कौशिक और धन्यवाद ज्ञापन कॉलेज चेयरमैन आर.एन .पी सिंह ने किया।

- डॉ. उपेंद्र कुमार 'सत्यार्थी', सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, सी वी एस, डीयू